महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प

हिन्दी विषय की पी-एच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा

निर्देशिका

प्रो. शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग
कला संकाय

शोध छात्रा

प्रिया वर्मा

हिन्दी विभाग-कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा-282005

2022

शोध परिचय :

साहित्य और सामाजिक यथार्थ की जीवन्त व्याख्या है, इसीलिए समाज के संस्पर्श से वह अछूता नहीं रह सकता। सामाजिक इकाई के रूप में वैयक्तिक जीवन के परितोष, व्यक्ति के सामाजिक परिवेश, सम्बन्ध और अन्तर्विरोध का वैविध्यपूर्ण स्वर ही सामाजिक गतिमानता का कारण बनता है। इसी सामाजिक गतिमानता में साहित्यिक रचना धर्मिता का प्रयोजन भी निहित होता है ।

साहित्य और समाज का अविच्छिन सम्बन्ध है । समाज यदि आत्मा है तो साहित्य उसका शरीर है । साहित्यकार समाज का ही अंग होता है उसे सामाजिक जीवन में ही अपने भावों, विचारों को अभिव्यक्त करने की प्रेरणा मिलती है । संक्षेप में साहित्य सामाजिक चेतना का परिचायक और मानव मस्तिष्क का पोषक है । इसीलिए साहित्य एवं समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है । जिसमें मानव-समाज पूर्ण रूपेण प्रतिबिम्बित होता है । इसी मौलिक सम्बन्ध के कारण साहित्यकार अपने साहित्य में मानवीय संवेदनाओं को उजागर करता है । हिन्दी साहित्य के प्रत्येक युग में मानवीय संवेदना के दर्शन किए जा सकते हैं ।

सम+वेदना अर्थात समान वेदना । किसी भी व्यक्ति को संकट के क्षणों में देखने पर हमारे भीतर विद्यमान ऐसा भाव जाग्रत होता है । जिसके कारण हम द्रवित होकर पर-पीड़ा को स्व-पीड़ा समझने लगते हैं, इसी भाव एवं गुण का नाम संवेदना है । साहित्य में मानवीय संवेदना की गतिशीलता का क्रमिक विकास पाया जाता है ।

'संवेदना' मूलत: मनोविज्ञान का शब्द है । अंग्रेजी में इसके लिए शब्द है- 'सेंसेशन' । वहां इसका अर्थ है- ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव । साहित्य की संवेदना से सीधा अभिप्राय उस अनुभूति से है जो परिस्थिति विशेष में सर्जक के हृदय को द्रवीभूत करती है और परिवेश की भयावह स्थितियों को दूर करने के लिए उसे प्रेरित करती है ।

साहित्य का मूल सम्बन्ध मानव की संवेदना से है । संवेदना के बिना साहित्य की सर्जना नहीं होती है। बुद्धि एवं दर्शन साहित्य को आंशिक रूप से प्रभावित करते हैं । बुद्धि, दर्शन, चिन्तन, ज्ञान, विज्ञान सबको पहले जीवन में आत्मसात होना पड़ता है । आत्मसात होकर मानव संवेदना का अंग बनना पड़ता है तभी शक्ति शाली साहित्य की सृष्टि होती है । संवेदना का धरातल चाहे जो हो उसे साहित्य के माध्यम से ही अभिव्यक्ति मिलती है । नई अनुभूति, भाषिक अर्थवत्ता, अनुभवों का नया संयोजन तथा मानव सम्बन्धों के परिवर्तन की सूक्ष्म परख आदि से ही साहित्य की संवेदना स्पष्ट होती है। भाषा, भाव और प्रेरणा तीनों ही प्रत्येक काल में साहित्य की संवेदना को नई अर्थवत्ता प्रदान करते हैं ।

प्रत्येक मानव की संवेदनायें समान नहीं होती वह उनके निजी अनुभवों पर आधारित भिन्न-भिन्न होती हैं। वस्तुत: इस असमानता का कारण उनकी शिक्षा, संस्कार, सामाजिक संरचना, आर्थिक स्तर आदि तो होते ही हैं साथ ही युग बोध भी उनकी संवेदना को प्रभावित करता है। मूलत: साहित्य का सम्बन्ध मानव हृदय से है। हृदय से हृदय तक की इसी यात्रा में संवेदना ही मुख्य भूमिका निभाती है। साहित्य सर्जक संवेदना के द्वारा ही पाठक के अंतर्मन को अनुरंजित करने वाला साहित्य सृजित करता है। इसीलिए संवेदना साहित्य सृजन का मूलाधार है। संवेदनशील कलाकार जीवन की चुनी हुई घटनाओं को लेकर भाषिक संजाल के द्वारा नई-नई सृष्टि करता है।

साहित्यकार एक संवेदनशील प्राणी होता है जोकि समाज को बहुत ही गहराई से परखता है और अपनी पारखी नजरों के द्वारा उसमें व्याप्त मानवीय संवेदनाओं से अनुप्राणित होता है। और उनका समायोजन अपने साहित्य में करता है। युग एवं परिवेश से संपृक्त हमारी आशा-निराशा, आकांक्षा-उपेक्षा, राग-विराग, हर्ष-विषाद व राजनीतिक और आर्थिक दशा-दिशा मे अस्थिरता, समस्याओं व चुनौतियों से यातनापूर्ण संघर्ष, मन के भीतर का अलगाव, असंतोष, आक्रोश, अस्वीकृति, विद्रोह की छटपटाहट के भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम साहित्य है।

बुंदेलखण्ड की भूमि पर जन्में महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य में बुंदेलखण्ड की मिट्टी की गंध झलकती है। वहाँ की देशज बोली सामाजिक संवेदनायें, मानव जीवन मूल्य एवं वर्तमान यथार्थ को लेखक ने अपने कथा साहित्य में सहज ढंग से अपनी कलम के माध्यम से उकेरा है। आपके कथा साहित्य में क्षरित होती मानवीय संवेदनाओं की तलाश की जाती है। आपके कथा साहित्य में आधुनिकता की भागदौड़ में शामिल जिन्दगी की विवशताओं में अपसंस्कृति की गर्त में धंसते जा रहे क्षरित जीवन को चित्रित किया गया है। लेखक ने अपने कथा साहित्य में निम्न-मध्य वर्ग की जिन्दगी के समूचे दायरे में प्रवेश कर चरित्रों को खंगालते हुए, सामाजिक शोषण, विषमता, अन्याय के प्रतिरोध में संवेदना को हथियार बनाया है।

आपकी रचना के पात्र पलायन नहीं करते बल्कि कथ्य और विचारों के विशाल फलक पर अदृश्य क्षितिज के पार जाकर मानवीय संवेदना की तलाश करते हैं और मानवीय सरोकारों से जुड़ते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में आपने अपनी लेखनी विविध विधाओं पर चलाई है यथा-कहानी, नाटक, उपन्यास आदि। आपकी दो कहानियों पर लघु फिल्म और एक उपन्यास पर (किन्नर कथा) फीचर फिल्म का निर्माण हुआ है। आपकी तीन रचनाओं का सफल मंचन भी हुआ है।

आपको विविध सम्मानों से सम्मानित किया गया है जो इस प्रकार हैं –

यशपाल कथा सम्मान 2016 (50,000/- उ. प्र. शासन), राजीव अग्रवाल कथा सम्मान 2015, डॉ. विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार 2008 (51000 उ. प्र. शासन), मुंशी प्रेमचंद कथा सम्मान, महाकवि अवधेश साहित्य सम्मान, अमृत लाल नागर कथा सम्मान, अवधीरत्न सम्मान 2010, हेल्पयु सम्मान 2015, संस्कार भारती का कथा सम्मान 2015, न्याय सिंधु सम्मान 2004, नगर पंचायत कुलपहाड़ द्वारा 1996 व 2016, नागरिक बाबू गजेन्द्र सिंह हिन्दी साहित्य सम्मान 2016, साहित्य सृजन सम्मान 2016, लोकमत सम्मान 2018, तुलसी सम्मान 2017, मैथिलीशरण गुप्त कथा सम्मान 2019, कलमवीर चक्र सम्मान 2020, अन्तरराष्ट्रीय कथा सम्मान 2021 (जापान) ।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन :

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन को आधार बनाने से पहले उसकी पूरी अवधारणा व उसके प्रत्येक प्रतिमान से परिचित होना पड़ता है । पी-एच.डी. में नामांकित होने के पश्चात् मैंने महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य को पढ़ना आरम्भ किया । आपका साहित्य निश्चित रूप से एक आदर्शोन्मुख साहित्य है, जो मानवीय मूल्यों की जीवन्तता व उत्कृष्टता तथा सामाजिक यथार्थ पर आधारित है । ऐसे साहित्य पर कार्य करना निश्चित ही मेरे लिए प्रेरणादायी है । आपके कथा साहित्य पर शोध करने की जब मेरी इच्छा बलवती हुई तो ऐसे में मेरी शोध निर्देशिका प्रो. शर्मिला सक्सेना जी ने प्रस्तुत विषय पर कार्य करने के लिए मुझे प्रेरित किया । आपसी चर्चा के बाद मैंने **"महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प"** विषय को अपने शोध कार्य के अध्ययन का आधार बनाने का निश्चय किया । विषय की रूपरेखा के निर्माण में मेरी शोध निर्देशिका प्रो. शर्मिला सक्सेना जी ने सहायता की । तदुपरान्त विषय से सम्बन्धित सामग्री संचयन हेतु मैं केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, अम्बेडकर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, दयालबाग एजुकेशनल विश्व विद्यालय के पुस्तकालय में कई बार गयी और वहाँ मैंने अध्ययन किया । साथ ही संचार के माध्यम इंटरनेट ने भी सामग्री संचयन में मेरी सहायता की। अपने गुरुजनों से इस विषय पर कार्य करने के लिए वार्ता की और सभी से वार्ता करने के उपरान्त **"महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प"** पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य :

इस अनुसंधान के माध्यम से कथा साहित्य में अभिव्यक्त संवेदनाओं तथा शिल्पगत वैशिष्ट्य को उजागर कर यथार्थ की पृष्ठभूमि पर रखने का प्रयास किया जायेगा । संवेदना और सृजनशीलता के सबल पक्ष को उभारने का प्रयास किया जायेगा । कथा के निहित यथार्थ के सूक्ष्म तंतुओं की पड़ताल करने का प्रयास किया जायेगा । जिसका उद्देश्य

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में मानवीय संवेदना के धरातल को संस्पर्श करना और उच्च मानवीय गरिमा को स्थापित करना होगा। कथा साहित्य में निहित उदात्त मानव मूल्यों को प्रसारित करना, साथ ही मानवीय संवेदना, अनुभूति, गंभीर चिंतन को जन मानस तक पहुँचाना ही इस अनुसंधान का उद्देश्य होगा ।

प्रस्तुत शोध विषय का महत्व :

कथा साहित्य में निहित उपन्यास और कहानी ऐसी विधाएं हैं जो मानव मन के साथ सहज में ही जुड़ जाती हैं कहानी एवं उपन्यास सर्वसाधारण को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। समाज का एक सहृदय एवं सुधीपाठक कहानी एवं उपन्यास को पढ़कर उसमें अभिव्यक्त प्रश्न व उद्देश्य को समझ सकता है । प्रस्तुत शोध विषय के अन्तर्गत महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य उपन्यास जगत एवं कहानी संग्रहों में अभिव्यक्त संवेदना के विविध आयामों को उठाया गया है। आपके कथा साहित्य में व्यक्त संवेदनायें मानव मन को झकझोर देती है । आपके कथा साहित्य में आज के मानव के क्षरित होते हुए जीवन मूल्यों के साथ-साथ उन नवीन मूल्यों को भी चित्रित किया गया है, जो कि उनके अपने देश के प्रति लगाव को स्पष्ट करते हैं। आपका कथा साहित्य समाज में क्षरित होते हुए मूल्यों की पुर्नस्थापना में सफलता प्राप्त करता है।

अनुसंधान पद्धति :

मानव हृदय एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है, जो अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए निरन्तर खोज, शोध व अनुसंधान करता है। यह प्रवृत्ति मानव में जन्म से ही विद्यमान रहती है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है । अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में हैं । मेरे शोध कार्य में प्रमुखता विवेचना, वर्णनात्मक, विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा । अन्त में सम्पूर्ण शोध कार्य का निष्कर्ष दिया जायेगा ।

शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य :

शोध कार्य हेतु महेन्द्र भीष्म पर मेरे द्वारा चयनित विषय **"महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प"** पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे द्वारा विविध विश्वविद्यालयों की शोध सूची पत्रों को भली प्रकार देखा गया और पाया कि वहां मेरे द्वारा चयनित विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ । मेरे

शोध कार्य के पूर्व महेन्द्र भीष्म पर जो शोध कार्य किया गया है । उसकी सूची दी जा रही है । जिसके द्वारा यह निर्धारित होता है कि मेरे द्वारा किया गया शोध कार्य मौलिक एवं नवीन होगा ।

आपके द्वारा रचित साहित्य में मुख्य रूप से उभयलिंगी विमर्श पर लिखे गये दो उपन्यासों को विविध विश्वविद्यालयों में शोध कार्य का आधार बनाया गया है ।

1. हिन्दी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श संवेदना और शिल्प (लघु शोध प्रबन्ध एम.ए.)

   शोध छात्रा-अनुपमा पाण्डेय

   शोध निर्देशिका-मधुर बाला यादव

   छत्रपति शाहुजी महाराज यूनिवर्सिटी, कानपुर, 2017

2. महेन्द्र भीष्म कृत "मैं पायल" में संवेदना और शिल्प (लघु शोध प्रबन्ध एम. फिल.)

   शोध छात्रा- आरती

   शोध निर्देशक-प्रो. प्रदीप श्रीधर

   सहायक शोध निर्देशक-डॉ. केशव शर्मा

   डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, 2019

3. "हिन्दी उपन्यासों में किन्नर समाज : एक विमर्श"

   शोधार्थी-सीमा सिंह

   शोध निर्देशक-प्रो. डॉ. दन्तात्रय मुरुमकर

   हिन्दी विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई 2017

4. "प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम"

   शोधार्थी-मोहिनी गुप्ता (किन्नर कथा, मैं पायल)

   शोध निर्देशिका-प्रो. शर्मिला सक्सेना

   दयाल एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा-2019

प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय "महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प" को पांच अध्यायों में विभक्त किया है जो इस प्रकार है-

प्रथम अध्याय

- **महेन्द्र भीष्म का व्यक्तित्व, परिवेश एवं कृतित्व**
  - व्यक्तित्व – जीवन परिचय, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, पुरस्कार सम्मान आदि
  - परिवेश – सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक
  - महेन्द्र भीष्म के रचना संसार पर परिवेश का प्रभाव
- **महेन्द्र भीष्म का कथा साहित्य : एक सर्वेक्षण**
  - कहानी का सैद्धान्तिक आधार
  - कृतित्व (कथा साहित्य की कालक्रमानुसार मुख्य विशेषताएं)
  - उपन्यास का सैद्धान्तिक आधार
  - कृतित्व (उपन्यास साहित्य की कालक्रमानुसार मुख्य विशेषताएं)

द्वितीय अध्याय

- **महेन्द्र भीष्म की कहानियों में व्यक्त संवेदना**
  - सामाजिक संवेदना
  - राजनीतिक संवेदना
  - आर्थिक संवेदना
  - धार्मिक एवं नैतिक संवेदना
  - मनोवैज्ञानिक संवेदना
  - नारी विषयक संवेदना
  - अन्य
- **महेन्द्र भीष्म की कहानियों का चरित्र-चित्रण**

तृतीय अध्याय

- **महेन्द्र भीष्म के उपन्यासों में व्यक्त संवेदना**
    - सामाजिक संवेदना
    - राजनीतिक संवेदना
    - आर्थिक संवेदना
    - धार्मिक एवं नैतिक संवेदना
    - मनोवैज्ञानिक संवेदना
    - नारी विषयक संवेदना
    - अन्य
- **महेन्द्र भीष्म के उपन्यासों का चरित्र-चित्रण**

चतुर्थ अध्याय

- **महेन्द्र भीष्म के कथा साहित्य की शिल्प योजना**
    - महेन्द्र भीष्म की कहानियों की भाषा शैली
    - महेन्द्र भीष्म के उपन्यासों की भाषा शैली

पंचम अध्याय

समकालीन प्रमुख कथाकार और महेन्द्र भीष्म

उपसंहार

परिशिष्ट

- आधार ग्रंथ
- उपजीव्य ग्रंथ
- पत्र पत्रिका
- शब्द कोश/विश्वकोश

आधार ग्रंथ :

1. तेरह करवटें, बुंदेल खण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग, परिषद प्रकाशक, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1996.

2. क्या कहें, सुलभ प्रकाशक, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2008, द्वितीय 2010.

3. लाल डोरा व अन्य कहानियाँ, सामयिक बुक्स प्रकाशक, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015.

4. तीसरा कंबल व अन्य कहानियां, सुलभ प्रकाशक, लखनऊ, तीसरा संस्करण 2016.

5. एक अप्रेषित पत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ संस्करण 2018.

6. बड़े सा' ब, काव्या पब्लिकेशन्स, भोपाल, प्रथम संस्करण 2021.

7. जय ! हिन्द की सेना, अमन प्रकाशन, कानपुर, तीसरा संस्करण 2016.

8. मैं पायल, अमन प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ संस्करण 2019.

9. किन्नर कथा, अमन प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ संस्करण 2020.

10. आखिरी दरख्त, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020.

11. बैरी, प्रलेख प्रकाशन, महाराष्ट्र मुम्बई, प्रथम संस्करण 2021.

सहायक ग्रंथ :

1. अन्तिम दशक की हिन्दी कहानियां संवेदना और शिल्प, शर्मा डॉ. नीरज, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011.

2. आंचलिक उपन्यास संवेदना और शिल्प, गुप्त डॉ. ज्ञानचन्द्र, अभिनव प्रकाशन।

3. कहानी की संवेदना शीलता सिद्धान्त और प्रयोग, वर्मा भगवान दास, ग्रन्थम प्रकाशन, कानपुर 1972.

4. हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि, सक्सेना आदर्श, सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर 1971.

5. उपन्यास का शिल्प संकलनकर्ता शर्मा देवेन्द्रनाथ लेखक गोपालराय, बिहार हिंदी ग्रंथ, पटना 1988.

6. अंधेर नगरी, संवेदना और शिल्प, कुमार सिद्धनाथ, अनुपम प्रकाशन, पटना 1993.

7. भाषा और संवेदना, चतुर्वेदी रामस्वरूप, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1981.

8. मानव मूल्य और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, सिंह मार बलराज, खामा पब्लिशर्स, 2012.

9. मानव मूल्य और साहित्य, भारती डॉ. धर्मवीर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

10. हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य संस्करण, अभिताभ डॉ. वेद प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1997.

11. नवम दशक के उपन्यास संवेदना और शिल्प, चन्द्र व्हसाले डॉ. कल्पना माणिक, अनवले, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर 2004.

12. आधुनिक हिन्दी कहानी : साहित्य में काममूलक संवेदना, महाजन श्री रामवी, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर 2007.

13. हिन्दी कहानी की शिल्पविधि का विकास, लाल श्री लक्ष्मी नारायण, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, तीसरा संस्करण 1967.

14. आठवें दशक के बाद हिन्दी कथा साहित्य, डॉ. राहुल, ग्रंथकेतन, दिल्ली 2009.

15. समकालीन हिन्दी साहित्य में नारी संवेदना, सालुके डॉ. दयानंद, विनय प्रकाशन।

16. कहानी : स्वरूप और संवेदना, यादव राजेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 1988.

17. निराला साहित्य में जीवन दर्शन, श्रीवास्तव डॉ. विनोदिनी, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ 1998.

18. नई सदी का कथा समय, सुबीर पंकज, शिवना प्रकाशन, सीहोर 2015.

19. परम्परा, सर्जन और उपन्यास, तिवारी विनोद, लोक भारती, इलाहाबाद 2002.

20. मानव मूल्य ओर साहित्य, भारती डॉ. धर्मवीर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

21. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तित नारी जीवन मूल्य, घोरपड़े डॉ. छाया देवी, विद्या प्रकाशन, कानपुर।

22. साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य, अरोरा विनीता, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली 1999.

23. हिन्दी उपन्यासों में नारी, रस्तोगी डॉ. शैल, वि. भू. प्रकाशन, गाजियाबाद 1977.

24. हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, लवानियां डॉ. रमेश चन्द्र, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद 1973.

25. इक्कीसवी सदी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित मानवीय संवेदना, यल्मे डॉ. उज्जवले।

पत्र पत्रिकाएं :

1. अनुसंधान

2. नूतन वाग्धारा

3. हंस

4. साहित्य शिल्पी

5. अभिव्यक्ति

6. साहित्य कुंज